जनवाचन आंदोलन

जन वाचन आंदोलन का मकसद है। किताबों को गाँव-गाँव ले जाना, इन किताबों को नवपाठकों के बीच पढ़कर सुनाना और पढ़वाकर सुनना। गाँव की जनता के पास आज भी पढ़ने-लिखने के लिए स्तरीय किताबें नहीं हैं और जो हैं भी वे बेहद महँगी हैं। भारत ज्ञान विज्ञान समिति ग्रामीण जन तक कम कीमत और सरल भाषा में देशभर के मशहूर लेखकों की किताबें पहुँचाना चाहती है, ताकि गाँव-गाँव में जन वाचन, पढ़ाई और पुस्तकालय संस्कृति पैदा हो सके। संपूर्ण साक्षरता अभियान से जो नवपाठक निकलकर सामने आए हैं, वे अपने साक्षरता के अर्जित कौशल को बनाए रख सकें, उनके सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक चेतना का स्तर बढ़े और वे जागरूक होकर अपने बुनियादी हकों की लड़ाई के लिए लामबंद हो सकें, यह इस अभियान का प्राथमिक उद्देश्य है। भारतीय लोकतंत्र की रक्षा के लिए गाँव के लोग आगे आएँ, इसके लिए भी इस तरह की चेतना का विकास जरूरी है। साक्षरता केवल अक्षर सीखने का काम नहीं है, यह पूरी दुनिया को जानने का काम है।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति
मूल्य : 6 रुपये

लिखाई की कहानी

अनीता रामपाल

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

लिखाई की कहानी : अनीता रामपाल
Likhai Ki Kahani : Anita Rampal

नवपाठकों के लिए भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित
चकमक से साभार

पुस्तकमाला संपादक: असद ज़ैदी और विष्णु नागर
कार्यकारी संपादक: संजय कुमार
Series Editor : Asad Zaidi and Vishnu Nagar
Executive Editor : Sanjay Kumar

सभी चित्र चकमक से साभार
लेजर ग्राफिक्स: अभय कुमार झा

प्रकाशन वर्ष: 1997, 1999, 2003, 2006

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा देशभर में चलाए जा रहे जन वाचन आंदोलन के तहत किया गया है ताकि लोगों में पढ़ने-लिखने की आदत पैदा हो सके। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य गांव के पाठकों को सस्ती और सरल भाषा में देश के मशहूर रचनाकर्मियों द्वारा लिखी गई उत्कृष्ट पुस्तकें उपलब्ध करवाना है। खासकर उन नवपाठकों के लिए जो देशभर में चलाए गए संपूर्ण साक्षरता अभियान से निकलकर सामने आए हैं।

मूल्य: 6 रुपये

Published by ***Bharat Gyan Vigyan Samithi, Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block, Saket, New Delhi - 110017, Phone : 011 - 6569943, Fax : 91 - 011 - 6569773,***
email: bgvs@vsnl.net

लिखाई की कहानी

अनीता रामपाल

लिखाई की कहानी

लिखना है, भई लिखना है। याद करें, जब पहले पहल आपने लिखना सीखा था। कितना मुश्किल था। उफ! क्या मेहनत करनी पड़ती थी। और फिर क्या का क्या बन जाता था। हाथ में चौक या पेंसिल पकड़ना ही अपने में कठिन काम था। फिर उससे अक्षरों की विचित्र आकृतियाँ बनाना और भी पेचीदा लगता था। वह कसरत आज उल्टे हाथ से करके देखिए! है न दूभर काम।

पर सवाल यह उठता है कि सबसे पहले मनुष्य को लिखना कैसे आया होगा? जब सीखने-सीखाने का कोई सिलसिला ही नहीं था। फिर लिखाई का ध्यान ही उसको कैसे आया होगा? अचानक ही उसे अक्षर बनाने की तो सूझी नहीं होगी। फिर किस तरह उसने लिखाई की शुरुआत की होगी?

शुरुआत की शुरुआत-हड्डी पर यह कैसे निशान?

लिखाई की शुरुआत की भी शुरुआत तक पहुँचने के लिए तो हमें बहुत ही पीछे जाना होगा। अपनी गाड़ी को हज़ारों साल पहले के ज़माने में पहुँचाना होगा। उस पुराने समय में जब सबसे पहले आदिमानव ने हाथ में पत्थर का औज़ार उठाया और उससे बना दिया एक हड्डी पर कोई संकेत। केवल यूँ ही कुछ लाईनें खींचने की

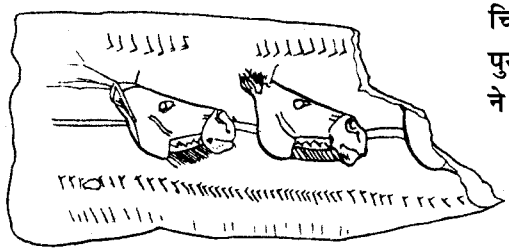

चित्र-1: बीस-पच्चीस हज़ार साल पुरानी हड्डियाँ जिन पर आदि मानव ने कुछ संकेत बनाए थे।

चित्र-2 और 3 : हड्डियों पर बने संकेत।

चित्र-2

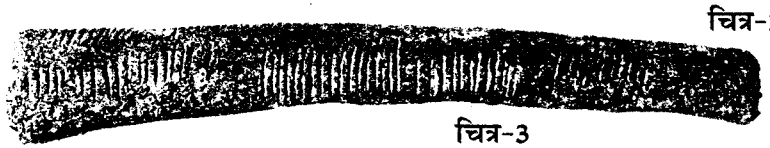

चित्र-3

चित्र-3

बात हम नहीं कर रहे, बल्कि सोच समझकर संकेत बनाने की। जिस संकेत का कुछ मतलब हो। और चक्कर तो इसी में है!

चूँकि खुदाई के दौरान तो बहुत-से ऐसे पत्थर और हड्डियाँ मिलते रहे हैं जिन पर कुछ-कुछ लाईनें बनी रहती थीं। चित्र 1,2,3 देखिए। पर बहुत समय तक यही माना जाता रहा कि आदिमानव ने यूँ ही बैठे-बैठे खुरचकर कुछ 'डिजाइन' या आकृति बना दी थी। और लगता भी तो ऐसा ही था।

अब भला सोचिए, पच्चीस हज़ार साल पहले किसी आदिमानव ने हड्डी पर कुछ खुरच दिया तो आज हम कैसे जानें कि उसने वैसा क्यों किया था? क्या उसके पीछे कोई मतलब था या नहीं? वह महज बैठे-बैठे लाईनें खींच रहा था या फिर सोच-समझकर कोई

ख़ास संकेत बना रहा था? अब उसके मन में तो झाँका नहीं जा सकता। न ही कोई और सुराग दिखाई पड़ता है। देखा कैसे-कैसे चक्कर हैं लिखाई की कहानी में! पर यही तो मज़ा है-हमेशा, हर मोड़ पर गहरा रहस्य! ज़ासूस की तरह अनजाने संकेतों में से छिपा हुआ मतलब खोज निकालना होता है।

हड्डी पर खुरचे इन संकेतों का पुराना रहस्य हाल ही में (यानी लगभग 23 साल पहले) मालूम हुआ है। मारशैक नाम के एक व्यक्ति ने इसकी खोज की। उसके मन में यह विचार आया कि चूँकि हड्डी पर निशान क्रम से बने लगते हैं इसलिए जरूर यह किसी नियमित घटना-क्रम को ही दर्शाते हैं। सोचिए तब आदिमानव के सामने कौन-कौन सी ऐसी घटनाएँ थीं जो क्रम से बार-बार घटती रहतीं?

मारशैक ने जाँच के दौरान पाया कि वाक़ई हड्डियों पर खुरचे संकेत चाँद के घटते-बढ़ते क्रम को दिखा रहे थे। यानि अमावस से पूनम और फिर अमावस तक का जो चक्र है उसी को देखकर आदिमानव ने मानो उसका एक 'लिखित' दस्तावेज़-सा बना लिया था उसी हड्डी पर। हर दिन का एक संकेत लगाया था, और कई महीनों तक यह काम किया था।

यह जानकर मारशैक तो दंग रह गया था। उसे स्वयं विश्वास नहीं आ रहा था कि यह सच है। और उसे डर था कि दुनिया के अन्य विशेषज्ञ उसकी बात को स्वीकार नहीं करेंगे। उसे अब ख़ूब मेहनत करनी थी। कई प्रमाण पेश करने थे इस बात को साबित करने के लिए।

मारशैक ने अलग-अलग जगहों पर पाई गई ऐसी हड्डियों की सालों तक बारीक़ी से जाँच की। सूक्ष्मदर्शी (माइक्रोस्कोप) से उन्हें परखा। उसने यह भी पाया कि कई जगह तो आदिमानव ने विभिन्न

तरह के संकेतों का इस्तेमाल भी किया था। उदाहरण के लिए, **चित्र-2** में दिखाई हड्डी पर तो केवल छोटी लाईनें बनी हैं, छोटी-छोटी लाईनों के कई समूह। पर **चित्र-3** वाली हड्डी पर विभिन्न तरह के कई संकेत पाए गए। और आश्चर्य की बात है कि हड्डी का यह 'कैलेन्डर' पूरे साल भर तक बनाया गयाा था।

हड्डी हल्की और छोटी होती है और इसे अपने साथ-साथ लिए चलना भी संभव था। सोचिए तो, पच्चीस हज़ार साल पहले उस आदिमानव ने कितनी लगन के साथ उस हड्डी पर साल भर तक एक-एक दिन का संकेत बनाया होगा। उस साल में चाँद कब पूरा दिखा, कब आधा, और कब-कब चाँद दिखा ही नहीं-इस सब जानकारी को उसने खुरचकर छोड़ दिया था।

भला क्या उपयोग था इस जानकारी का? हम आज तो केवल अनुमान ही लगा सकते हैं। शायद उससे वह जान सकता था कि कितने, 'पूरे चाँदों' बाद जब ठण्ड पड़ेगी तो बर्फ़ से बचने का उपाय उसे ढूँढना है। या शिकार के लिए निकले तो आनेवाली अमावस तक अपनी गूफ़ में लौट आना है।

क्या मालूम? हो सकता है कि किसी गर्भवती महिला ने हड्डी पर समय का हिसाब रखकर यह जानना चाहा हो कि कितने पूरे चाँदों बाद उसे जचकी के लिए तैयार रहना पड़ेगा। (वैसे, तब गिनती तो वे जानते नहीं थे-पर क्या गिनती बीज भी इसी हड्डी में नहीं छिपा है?)

हड्डियों के 'कैलेन्डर' की ख़बर सुनते ही दुनिया भर में ख़ूब हलचल मच गई थी। पुरानी चीज़ों का अध्ययन करने वाले लोगों ने सोचा भी न था कि लिखाई की शुरुआत का बीज इतने पहले खुरची हुई किसी हड्डी में छिपा होगा। तब तक तो सभी यही मानते थे कि आदिमानव को केवल चित्रकारी आती थी, संकेत बनाने नहीं।

चित्र-4

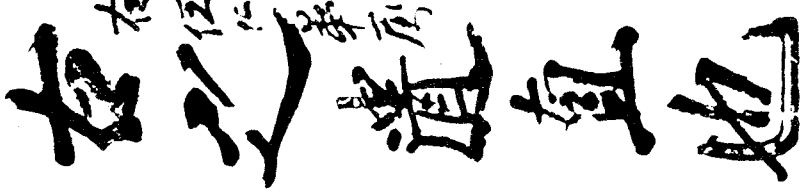

चित्रकारी है या कोई चित्र-संकेत?

कुछ लकीरें चित्रकारी के लिए बनी हैं या उनसे कोई खास संकेत बना है यही जानना ज़रूरी होता है। और इसी में चूकने का डर भी होता है। यह केवल आदिमानव द्वारा बनाई गई लकीरों की समस्या नहीं। मज़े की बात तो यह है कि आज की किसी लिखाई से हम परिचित न हों तो हम भी उसे चित्रकारी मान बैठें।

जैसे, **चित्र-4** की सुन्दर आकृति वास्तव में चीनी भाषा की एक कविता है। **चित्र-5** में दी गई आकृति ताजमहल के संगमरमर पर उकेरी हुई नक्काशी है। अब तो आप पहचान लेंगे की कहाँ चित्रकारी है और कहाँ क़ुरान के वाक्य अंकित हैं। परन्तु जो फ़ारसी या उर्दू लिपि को नहीं पहचानते वे अक्सर धोखा खा जाते हैं।

चित्र-5

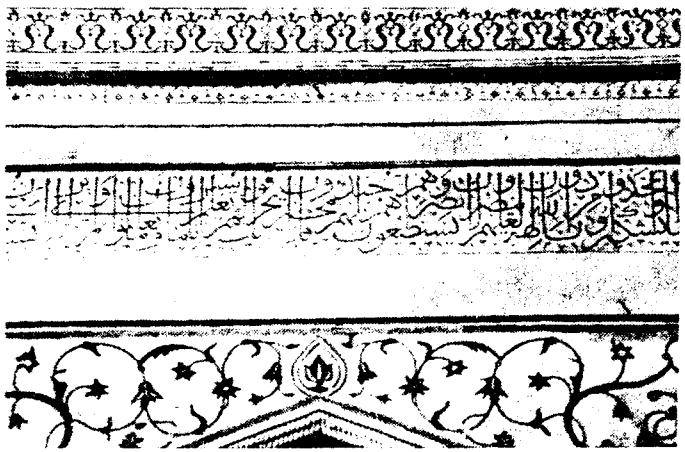

चित्र-6

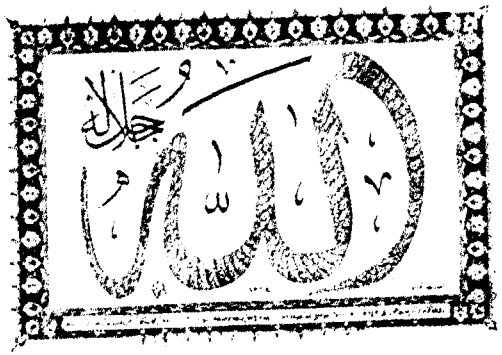

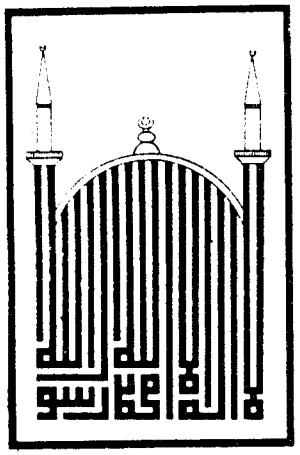

वैसे, किसी लिपि को सुंदर चित्रकारी की तरह लिखना भी अपने आप में एक कला है जिसे ख़ुशख़त (सुलेख) कहते हैं। उर्दू, अरबी और फ़ारसी में इस कला को बहुत विकसित किया गया था। चूँकि इस्लाम में मूर्तियाँ तो बनाते नहीं, इसलिए अल्लाह के नाम को सुंदर से सुंदर ढंग से लिखना ही इबादत (पूजा) माना जाता था-

चित्र-6

हज़ारों साल पहले आदिमानव ने चट्टानों पर तरह-तरह की चित्रकारी की थी। क्या आपने कभी उनके चित्र देखे हैं? मध्यप्रदेश में भीमबैठका, रायसेन, काथोटिया, आदमगढ़ आदि अनेक जगहों पर ऐसे चित्र पाए गए हैं। पत्थर पर इतने बारीक चित्र बनाने और उनमें रंग भरने का (रंग भी ऐसा जो हज़ारों सालों तक धुला-मिटा नहीं) कौशल आदिमानव में था।

परन्तु बोलने की भाषा उसने बनाई न थी। कुछ ही अवाज़ों से उसका काम चल जाता। चित्र बनाते-बनाते उसने कुछ सरल संकेतों का इस्तेमाल करना शुरू किया। यानी मानो कोई

चित्र-7

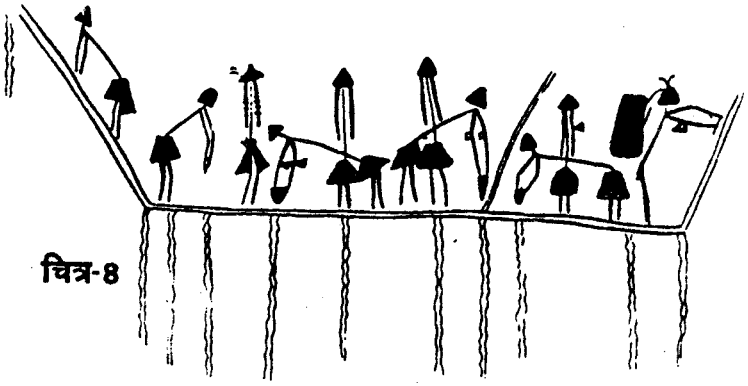

चित्र-8

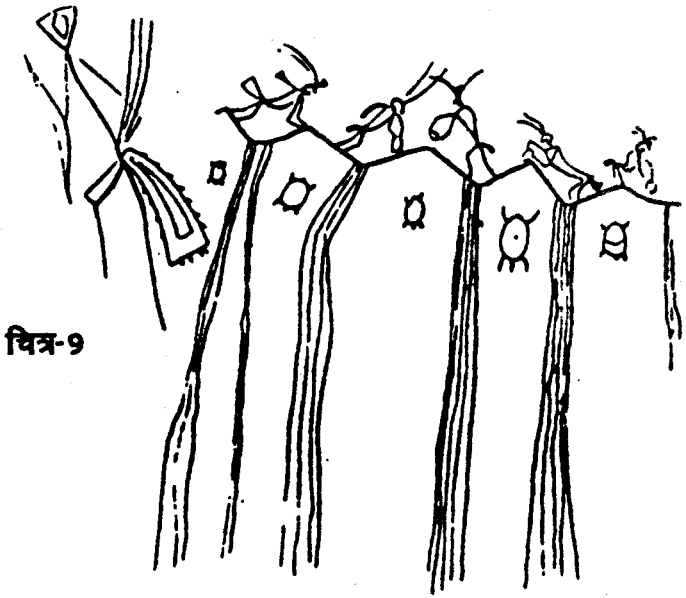

चित्र-9

चित्र-10

जानवर बनाना है तो पूरी आकृति न बनाकर कोई छोटा संकेत ही बना दिया। जैसे जंगली बकरा न बनाकर बस **चित्र-7** जैसे संकेत बना दिया। जिसमें उसके सीगों से ही वह पहचाना जा सके।

अच्छा, चलिए एक पहेली हो जाए। **चित्र-8** और 9 को देखिए। दोनों चित्रों में क्या आप पहचान सकते हैं कि नीचे की ओर जाती हुई लाइनें किस चीज़ का संकेत हैं? आसपास किस तरह के जानवर बने हैं? इनसे कुछ मदद मिली? मज़े की बात तो यह है कि ये चित्र (**चित्र-8,9**) तो भोपाल के पास (काथोटिया और सतकुंडा में) मिले हैं जबकि **चित्र-10** मिला है दूर स्पेन देश की एक (अल्टामीरा) गुफा में। यानी हज़ारों साल पहले दुनिया की दो अलग जगहों के आदिमानव ने कुछ एक ही जैसे संकेत बनाने का सोचा!

हाँ, अब तक तो आपने बूझ ही लिया होगा कि यह लाइनों का संकेत 'पानी' दिखाने के लिए था। इस चित्र में मछली, केकड़ा, मगरमच्छ आदि जैसे जानवरों को देखकर ही यह अनुमान लगाया गया। आदिमानव के इन चित्रों में जिस तरह के संकेतों की शुरूआत हमें दिखती है, कुछ उसी तरह के संकेतों से हज़ारों साल बाद पहली लिपि बनी थी।

पहली लिपि का जन्म मोसोपोटामिया में

लगभग छः हज़ार साल पहले (लगभग 4000 ईसा पूर्व) की बात है। दुनिया के सबसे पहले शहर बनने लगे थे। शहरों के साथ व्यापार भी ज़ोर पकड़ रहा था। व्यापार का हिसाब रखने के लिए लिखने की ज़रूरत पड़ती थी। केवल याद रखने से लेन-देन का कारोबार चल नहीं पा रहा था। राजा भी अपना शासन बनाए रखने

चित्र-11 : इस मिट्टी की टिकिया पर मेसोपोटामिया के एक साहुकार ने हिसाब लिखकर रखा दिया कि उसने अपने कितने गधे किस-किसको कर्ज़ में दिए। यह टिकिया 2500 ईसा पूर्व में लिखी गई थी।

के लिए लिखित आदेश जारी करने लगे थे। शासन की तिजोरी भरने के लिए किसानों से कर भी वसूल किया करते थे। उसका भी पूरा लेखा जोखा रखा जाता।

मेसोपोटामिया (जहाँ आज का इराक देश है) की पुरानी लिपि को ही सबसे पहली लिपि माना गया है। मेसोपोटामिया के साथ मिस्र, चीन और भारत की पुरानी सभ्यताओं ने भी अलग-अलग लिपियाँ बनाई थीं। इन पहली लिपियों में आज जैसे अक्षरों की वर्णमाला नहीं थी, चित्र-संकेतों से ही शब्द बनाए जाते थे।

मेसोपोटामियाा की लिपि का नाम पड़ गया है 'क्यूनिफॉर्म' जिसे हिन्दी में हम 'कीलाक्षरी' भी कहते थे। चूँकि इसके संकेत कीलों की तरह दिखते हैं (**चित्र-11**)। दरअसल लकड़ी की नुकीली क़लम से गीली मिट्टी की पट्टी पर इसे लिखा जाता था।

शुरू-शुरू के चित्र संकेत आसान थे। जैसे, बताइए इन संकेतों का क्या अर्थ होगा ? बूझ लिया ? पहला संकेत था 'गाय' का दूसरा

'बैल' का। बैल के इस संकेत और आदिमानव द्वारा बनाए गए जंगली बकरे के संकेत (**चित्र-7**) में कितनी समानता है। जबकि दोनों संकेतों के बनने के बीच दस-पंद्रह हज़ार सालों का अंतर है! चित्रों से चित्रलिपि बनने में कई हज़ार साल लग गए थे।

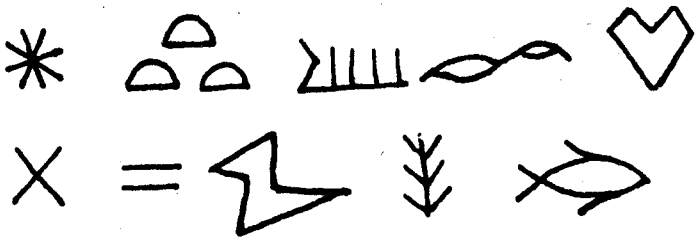

अब ऊपर दिए मेसोपोटामिया के चित्र संकेतों को पहचानने की कोशिश करें। इन दस संकेतों में से आप कितने बूझ पाए ?

नुकीली क़लम से घुमावदार संकेतों को मिट्टी पर लिखने में दिक्कत आती थी। इसलिए इन्हें बदलकर कँटीला बना दिया गया। साथ ही संकेतों को टेढ़ा करके लिखने लगे ताकि लिपि को बाएँ से

दाएँ लिख सकें। जैसे गाय के संकेत को बदलकर कँटीले संकेतों में पहले यूँ कर दिया और फिर उसे टेढ़ा करके यूँ लिखने लगे। इसी तरह पहाड़ के इन गोलाकार संकेतों को पहले कँटीला बनाया और फिर घुमाकर यूँ लिखने लगे। लेकिन इन बदलावों से ये तथा अन्य सभी संकेत इतने जटिल हो गए कि फिर उन्हें समझना मुश्किल हो गया (**चित्र-12**)। आम लोग तो इन्हें पढ़ नहीं ही पाते थे।

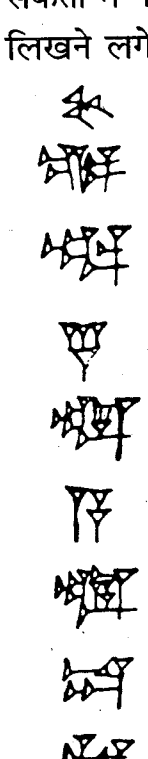

चित्र-12

लिपि जटिल होने के साथ-साथ काफ़ी विकसित तो हुई। पर इसे जानने वाले लोग बहुत ही कम थे। और लिखना उनका धंधा बन गया था। जिसके दम पर उन्होंने अपनी धाक जमा ली थी। उन लिपिकों (लिखना जानने वालों) की अलग एक उच्च जाति-सी बन गई थी।

अक़सर राजाओं को लिखना नहीं आता था। राजा अपने लिपिकों को ख़ुश रखते थे ताकि वे उनकी ख़ूब बढ़ा-चढ़ाकर प्रशंसा लिखते रहें। और उन्हीं से राजाओं का कारोबार भी चलता रहता। राजा कहीं भी दान करते तो तुरन्त शिलालेखों पर पूरा ब्यौरा लिखवा देते कि कब कितना दान किया था। देवी-देवताओं की प्रशंसा के लेख भी लिखवाए जाते थे। साहूकार अपने सभी लेन-देन का हिसाब लिखवाया करते।

यही नहीं, क़ानून, राजनीति, धर्म, खगोल की पूरी पुस्तकें ही मिट्टी की पट्टियों पर लिख दी जाती थीं। जैसे एक मिट्टी के पट्टी पर यह जानकारी

मिलती है कि शुक्र ग्रह उन्हें कब-कब दिखा था। पहले की चित्र लिपियाँ इतनी मुश्किल हो गई थीं कि इनको सीखना बड़ी लगन का काम था। कुछ ही बच्चों को चुनकर लिखना सिखाया जाता था और उनकी ख़ूब पिटाई भी होती थी। उन्हें छः सौ से अधिक चित्र संकेत याद करने पड़ते थे।

सोचिए, आज भी चीन देश की लिपि के कई हज़ार अलग-अलग संकेतों को वहाँ के बच्चे कैसे सीखते होंगे। हमें तो क, ख, ग जैसे अपने कुछ ही अक्षरों को लिखना सीखना इतना मुश्किल लगता है। है न ? और उस पुराने ज़माने में मेसोपोटामिया के बच्चों को गीली मिट्टी या पत्थर पर लिखना पड़ता था। उनके पास काग़ज़ नहीं था।

मिस्र की लिपि 'देवताओं की लिखाई'

लेकिन मिस्र में लिखना सीखने वाले बच्चों के पास मिट्टी और पत्थर के अलावा एक और बढ़िया-सी हल्की-फुलकी, लचीली-सी चीज़ थी-काग़ज़ जैसी 'पैपीरस'। (हालाँकि काग़ज़ तो सबसे पहले चीन में बना था।)

मिस्र की नील नदी के किनारों पर पैपीरस नाम का पौधा उगता था। उसी के तने से काग़ज़ जैसी पट्टियाँ बनाई जातीं जिन पर स्याही-कलम से लिखा जाता। पैपीरस पर लिखाई भी आसानी और तेज़ी से हो पाती थी। कहाँ पत्थर पर ठोक-ठोक कर या मिट्टी पर खुरचकर संकेत बनाना, और कहाँ काग़ज़ पर स्याही-कलम से तेज घसीटा मार पाना। और काग़ज़ को तो मोड़कर आराम से हाथ में पकड़ भी सकते थे।

मिस्र की लिपि में कँटीले कील जैसे संकेत नहीं थे-इसके संकेतों में तो सुन्दर चित्रकारी थी। इस लिपि को बहुत कलात्मक ढंग से लिखा जाता था। इसका नाम पड़ा 'हाईरोग्लिफिक्स' या

'देवताओं की लिखाई'। नीचे इस लिपि के संकेत देखिए। क्रमशः चलना, खाना, ढूँढना, रोना। इनको तो आप पहचान गए होंगे। आगे क्रमशः बैल, मधुमक्खी (या शहद), आदमी (या बेटा), औरत

(या विधवा), खुशी, इन शब्दों के संकेत पहचानने भी बहुत मुश्किल नहीं।

परन्तु दिक़्क़त तो तब आती है जब कोई पूरा वाक्य लिखा हो। **चित्र-13** में जो वाक्य दिया है उसका मतलब है, "वह मेरा बेटा है जिसने मेरे नाम को इस शिलालेख पर जीवित रखा है।" अब यहाँ तो शायद केवल 'बेटा' का संकेत पहचान में आता है, बाकी तो कुछ समझ नहीं आता।

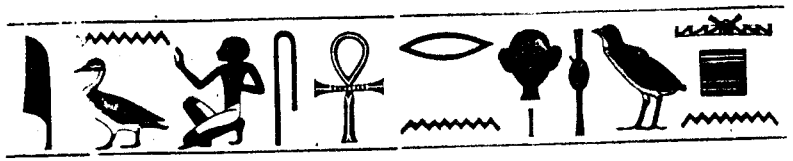

चित्र-13

यही नहीं, हाइरोग्लिफ़िक्स (देवताओं की लिखाई) में और भी चक्कर थे। इसे किस दिशा से पढ़ना शरू करें यह तक निश्चित नहीं था। चूँकि कभी तो इस लिपि को दाएँ से बाएँ लिखा जाता, ऊपर से नीचे और कभी बाएँ से दाएँ। फिर भला कैसे कोई तय करे कि लिखाई की दिशा क्या है? हाँ, इसका एक सुराग था कि संकेतों में बने पशु-पक्षी (सभी जीवित प्राणी) किस ओर मुँह किए हैं-उसी जगह से पढ़ना शुरू करें। नीचे चित्र में दिखाया है कि एक ही बात को कैसे अलग-अलग दिशाओं में लिखा जाता था।

पुरानी लिपियों का रहस्य कैसे खुला

आप सोच रहे होंगे कि अगर वाक़ई यह पुरानी लिपियाँ इतनी टेढ़ी हैं तो फिर इनके बारे में आज हमें मालूम कैसे है? हाँ, आजकल

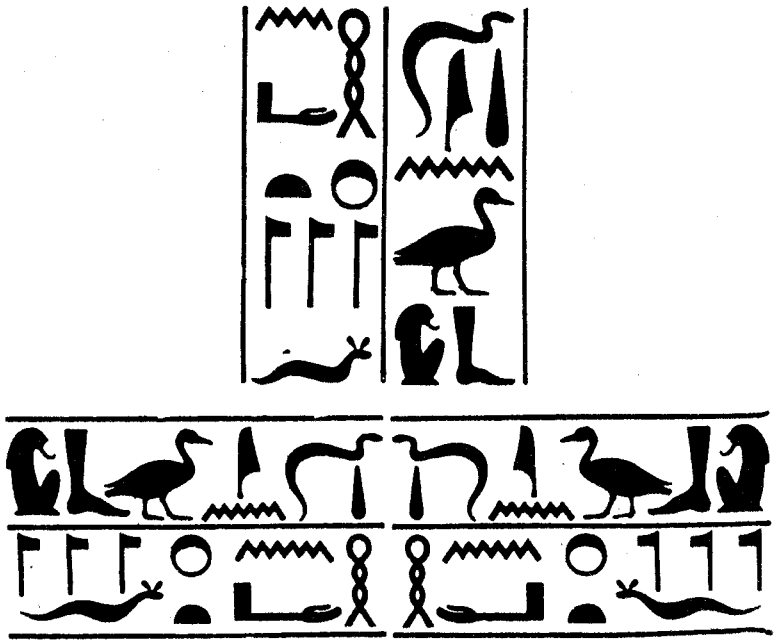

एक पुराना जापानी चित्र जिसमें लिखना सिखाया जा रहा है। उस ज़माने में लड़की को लिखना आना तो बहुत ही बड़ी बात मानी जाती थी।

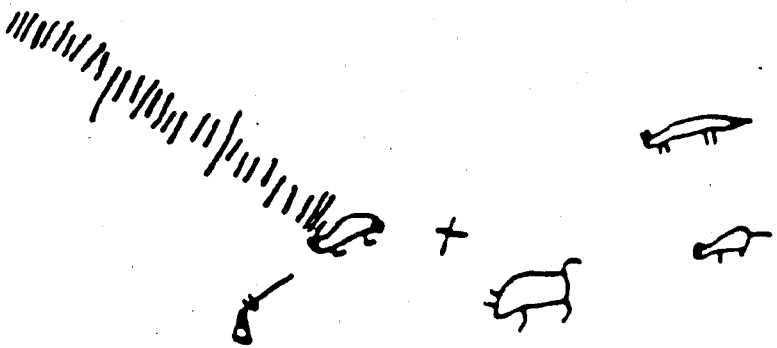

इसी ज़माने में लिखा गया एक पत्र! जी हां, अक्षरों का साथ न होने पर चित्रों का सहारा लिया उत्तरी अमरीका के ओजीबबा जनजाति के एक आदिवासी ने। भैंस और दो छोटे जानवरों की खालों के बदले (संकेत ×) सौदा किया है बंदूक और ती ऊदबिलावों की खाल का।

त्रिकोण और पिरामिडों का गणित लिखा हुआ है इस चार हज़ार साल (1900 ई.पूर्व) पुराने पैपीरस पर।

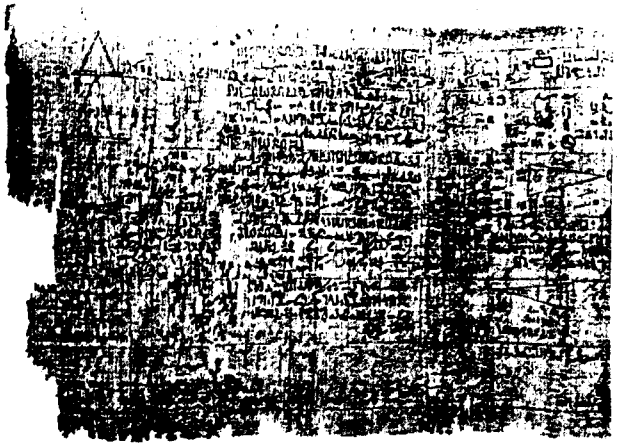

चमड़े पर लिखे गए गणित के जोड़ हिसाब (1700 ई.पूर्व)
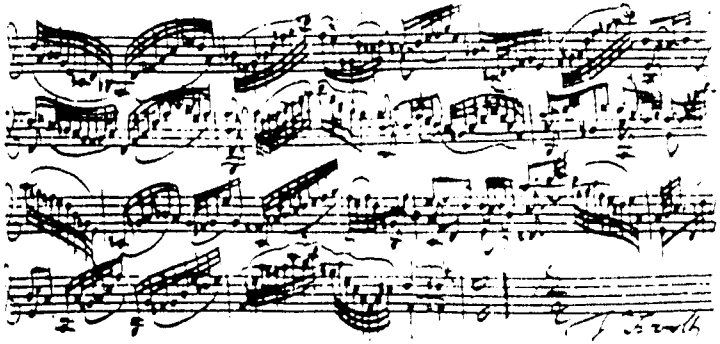
संगीत को लिखने के लिए विशेष संकेतों का इस्तेमाल होता है। विश्व के प्रशिद्ध संगीतकार जोहान सेबैसटियन बाख द्वारा लिखे गए पाश्चात्य संगीत का एक अंश।

तो कोई ऐसे लिखता नहीं। और ये लिपियाँ तो सोलह सौ साल पहले (यानी 400 ईसा के बाद) से लुप्त ही हो गई थीं। फिर आज के लोगों ने इन संकेतों का मतलब कैसे जाना होगा?

लगभग पंद्रह शताब्दियों तक यह लिपियाँ रहस्य में ही डूबी रहीं। कई लोगों को खुदाई के दौरान अनेक पत्थर, मिट्टी की पट्टियाँ और पुस्तकें मिलती तो रहीं पर उन पर लिखा क्या है यह समझ में नहीं आता था। सालों तक ये पहेलियाँ लोगों को सताती रहीं।

आख़िर लिपियों के रहस्य का ताला खोला फ्राँस के रहने वाले शैंपोलियों ने। एक ही पत्थर पर बने संकेतों को समझने में उसने चौदह साल लगाए। उसे मालूम चला था कि रोज़ेटा में पाया गया वह पत्थर कुछ ख़ास है–चूँकि उस पर (टॉलेमी राजा का) एक ही संदेश तीन लिपियों में लिखा हुआ था। एक लिपि थी यूनानी जिसको तो वह जानता था। अन्य दो लिपियाँ प्राचीन मिस्र की थीं जो कोई नहीं जानता था।

उसे सबसे पहला सुराग मिला जब उसने यह पहचान लिया कि मिस्र की लिपि में जब भी कोई नाम लिखा जाता है तो उसके चारों ओर एक 'फ्रेम' या घेरा बनाया जाता है **(चित्र–14)**। बस, इसी से शैंपोलियों ने दो नाम पहचान लिए। रोम का राजा 'टॉलेमी' और उसकी पत्नी 'क्लीयोपैट्रा' का (जो 200 ईसा पूर्व में मिस्र पर राज कर रहे थे)। उन्हीं दो नामों से फिर उसने एक तीसरा नाम पहचाना। एलकज़ेन्ट्रस (सिकंदर) का।

बस, फिर क्या था। वह तो नामों के ही पीछे पड़ गया। चूँकि 'फ्रेम' या घेरा बना देखकर यह पहचानना आसान था कि कौन–कौन से संकेत नाम हैं। कई जगहों से उसने कुल अस्सी नाम इकट्ठे किए और उन्हीं को बूझते–बूझते उसे काफ़ी संकेतों का मतलब समझ आने लगा। सालों की मेहनत बाद वह रोज़ेटा के उस पत्थर से

चित्र–14: सक शिलालेख में मिस्र की लिपि में कुछ लिखा है। जिस चित्र के चारों ओर 'घेरा' बना है वह वास्तव में एक नाम है।

मिस्र लिपि का रहस्य खोलने में सफल हुआ। ऐसे ही लोगों की लगन और मेहनत का नतीजा है कि आज दुनिया को मिस्र की पुरानी सभ्यता के बारे में इतना कुछ मालूम है।

पुरानी लिपियों की पहेलियाँ बुझाने का बुखार केवल बड़ों को ही नहीं बच्चों को भी उत्साहित करता रहा है। ऐसा ही एक बालक था माईकल वेन्ट्रिस। चौदह साल का ही था जब उसने लंदन में एक रोचक भाषण सुना। यूनान के क्रीट द्वीप की पुरानी लिपि के बारे में

टॉलेमी

क्लीयोपैट्रा

एलकजेन्ड्रस

सुनकर उसने कसम खाई कि इस लिपि की पहेली वही सुलझाएगा और वैसा ही कर दिखाया। सोलह साल बाद सन् 1952 में उसने दुनिया को रैखिक-ब नाम की लिपि का रहस्य बता दिया।

अपनी सिंधु लिपि का रहस्य कौन खोलेगा?

कई पुरानी लिपियों का रहस्य तो आज भी बना हुआ है। जैसे हमारी ही पुरानी हड़प्पा सभ्यता की लिपि (**चित्र-15**) में दी मुहरें पर बने सिन्धु लिपि के संकेत आज तक नहीं पहचाने गए हैं। कितने ही लिपिविदों को इसने चक्कर में डाल रख है। इसे सिन्धु लिपि भी कहा जाता है चूँकि सिन्धु नदी के किनारे बसे कई पुराने शहर की यह लिपि थी। इस सभ्यता का तो पिछले साठ-सत्तर सालों में ही पता चला है।

हड़प्पा सभ्यता के शहर भारत वे सबसे पुराने शहर थे। लगभग पाँच-छः हज़ार साल पहले (3500 ईसा पूर्व) ये शहर बसे थे। खुदाई के दौरान कई हजार मिट्टी की मोहरें और बर्तन मिले हैं जिन पर कुछ लिखा हुआ दिखता है। पर इन पर क्या लिखा है कोई ठीक से समझ नहीं पाया। इस लिपि की पहेली कोई बूझ पाए तो सच मज़ा आ जाए।

उन लोगों की चीज़ें देख-देखकर इतना अचम्भा होता है इतने सवाल मन में उठते हैं कि आखिर कैसे इतने बढ़िया शहर बना पाए थे वे लोग? तौल के बाँट, ताँबे

के बर्तन, पानी के शानदार हौज़ और नालियाँ आदि। यह सब बनाने का विज्ञान और तकनीक वे कैसे जान पाए थे? उनकी लिपि समझने पर हम उनके बारें में शायद और अधिक जान पाएँ। और अपने ढेरों सवालों के कुछ उत्तर ढूँढ पाएँ।

वर्णमाला के अक्षरों ने दिखाया कमाल

सबसे पुरानी लिपियाँ, चित्र संकेतों का इस्तेमाल करती थीं। तभी तो मेसोपोटामिया, मिस्र, चीन और भारत की इन पहली लिपियों में सैकड़ों संकेत होते थे- हर अलग शब्द का मानो अलग ही संकेत था। परन्तु तीन हजार साल पहले(1000 ई. पू.) लिखाई की कहानी ने एक नया मोड़ लिया। संकेतों की जगह आ गए अक्षर, जिन्होंने लिखाई में अपना कमाल दिखा दिया। बस, बीस-तीस अक्षरों से सभी कुछ लिखा जा सकता था। और यह कैसे? चूँकि अब हर शब्द को उसके स्वर से लिखा जाने लगा था।

देखिए, चाहे कितने ही अलग-अलग शब्द हों, जैसे चकमक, मामा, चमक, कच्चा, कम, चमचम, काकी, चाचा .... इन सभी शब्दों को लिखने के लिए हमें केवल तीन ही अक्षरों च, क, म, की ज़रूरत पड़ती है। है न? परन्तु चित्र संकेत बनाने की कोशिश करें! अलग-अलग संकेत बनाते बनाते आप थक जाएंगे। तो हुई न बचत अब अक्षरों से लिखने में।

वर्णमाला के अक्षरों की लिपि को तीन हज़ार साल पहले फीनिशियन लोगों ने बनाया था। वे लोग जहाज़ में बैठकर दूर देशों तक जाया करते थे व्यापार करने। उनके साथ उनकी लिपि भी दुनिया में कई जगह पहुँची। बस फिर क्या था। कई जगह अक्षरों वाली लिपियाँ बनने लगीं। हीब्रू, यूनानी, अरबी के साथ-साथ हमारे यहाँ भी अक्षरों वाली ब्राह्मी लिपि में लिखा हुआ है। ब्राह्मी

लिपि से ही हमारी अधिकतर सभी लिपियाँ बनी हैं। परन्तु ब्राह्मी को आज आप पढ़ना चाहें तो पहचान नही पाएंगे। काफ़ी अलग दिखती है यह हमारी हिन्दी की देवनागरी लिपि से।

अच्छा, अब यहीं ख़त्म करते हैं लिखाई की इस लम्बी कहानी को। सच, कितना लंबा सफ़र तय किया है आपने! पच्चीस हज़ार साल पहले आदिमानव के उस हड्डी के 'कैलन्डर' से लेकर आज जैसी अक्षरों वाली लिपि तक।

कहा जाता है कि तीन हज़ार साल पहले जब वर्णमाला के अक्षर दुनिया में आए तो लिखाई में एक क्रांति आ गई थी। चूँकि लिखना इतना आसान हो गया था। सैकड़ों, हंज़ारों, चित्र संकेतों से जूझना नहीं पड़ता। बस, पच्चीस-तीस अक्षरों को सीखों और लिख लो सभी कुछ। पर क्या आपको लगता है कि वाक़ई ही दुनिया भर में लिखाई की क्रांति आई है?

मुझे तो लगता है कि तीन हज़ार साल पहले क्रांति शायद आते-आते रुक गई। फिर उसके बाद से लिखाई की कहानी कुछ सुस्त हो गई थी। बहुत देर से अब उसमें कोई फड़कती हुई घटना नहीं घटी है। हाँ, लिखाई ने क्रांतिकारी जामा ज़रूर पहना और छपाई का रूप धारण किया-पर वह तो एक अलग ही कहानी है।

लिखाई की कहानी में असल क्रांति तो तब आएगी, जब दुनिया के सभी लोग लिखना जान जाएंगे। हमारे देश में करोड़ों लोगों का अक्षरों से कभी परिचय नहीं हुआ। लाखों बच्चे कहानियाँ केवल

सुन सकते हैं पर नई-नई कहानियाँ स्वयं पढ़ नहीं पाते।

लिखाई की क्रांति तभी होगी जब यह बच्चे अक्षरों को अपना सकेंगे। आप उनकी क्या मदद कर सकते हैं? अपने अक्षर उनके साथ भी बाँट सकते हैं? हमारे देश में शायद यह कहानी अब फिर नई अँगड़ाई ले रही है। पुकार रही है कि आप सब आओ और मदद करो, मुझमें एक नई जान लाओ। बहुत सुस्ता ली मैं, अब मैं भी तेजी से भागना चाहती हूँ।

जाते-जाते आपके लिए एक आख़िरी पहेली। आप सब जो यह कहानी पढ़ रहे हैं- बोलिए आप कितने अक्षरों के दोस्त हैं? भारत की कितनी लिपियाँ आप पहचान पाते हैं? नहीं, नहीं, पुरानी रहस्यमयी लिपियाँ नहीं। हम तो आज की चालू (प्रचलित) भाषाओं की लिपियों की बात कर रहे हैं। अच्छा, चलिए पहचानिए-नीचे दी गई कौन-कौन सी लिपि आप पहचान पाए? और इन सबमें जो एक शब्द लिखा हुआ है, वह भला क्या है?

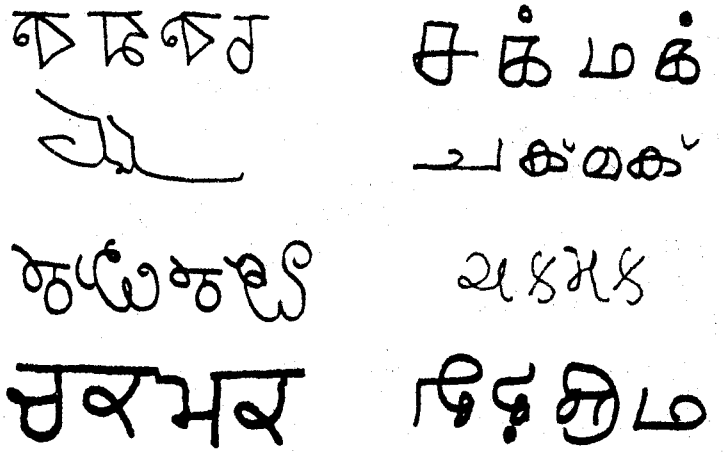

□□□□

हज़ारों साल पहले मिस्र में लिखाई और संगीत को पूजा जाता था।

मिस्र में पाई गई लिपिक (लिखने वाला) की एक मूर्ति जो लगभग पाँच हज़ार साल पुरानी है। लिपिक अपने हाथ में पैपीरस को मोड़कर पकड़े हुए है। बैठने की मुद्रा ऐसी है मानो लिखते हुए साधना कर रहा हो।

पैपीरस काग़ज़ पर मिस्र की लिपि में लिखी तीन हज़ार साल से अधिक पुरानी पुस्तक का एक पन्ना। यह पुस्तक हर मृतक के साथ दफनाई जाती थी। अंतिम संस्कार के समय पुरोहित इसी के अंश पढ़ते थे कि इन शब्दों के लिखे होने से मृतक को शक्ति मिलेगी जिससे वह मृत्यु के देवता (सींगों वाला) और मृत्युलोक के अन्य पशुओं से बच निकलेगा। दुनिया की कई अन्य सभ्यताओं में माना जाता था कि लिखाई में दिव्य शक्ति होती है।